तृतीय अध्याय

पं. गुदई महाराज का जीवन परिचय एवम् व्यक्तित्व

तबला वादन के प्रतिभाशाली और अप्रतिम वादक पंडित सामता प्रसाद जी थे। एकल तबला के अद्भुत पंण्डित सामता प्रसाद को गायन, तन्त्रवादन और नाच के साथ संगत करने में एक बेजोड़ और मौलिक स्थान प्राप्त था। पंडित सामता प्रसाद जी ने अपने जटिल दमदार और सरस वादन से शास्त्रीय तबला में एक आयाम जोड़ दिया। बनारस घराने की इस महान हस्ती को कीर्ति और मान्यता पाने के लिए तमाम आर्थिक कष्टों को सहते हुए दुर्गम रास्तों से गुजरना पड़ा। जब शोहरत मिली तो उसका एक अनन्त सिलसिला उनके जीवन के आखिरी क्षण तक चलता रहा।

"पद्म भूषण पं० सामता प्रसाद मिश्र उर्फ गुदई महाराज जी का जन्म 18 जुलाई सन् 1920 ई० में वाराणसी के कबीर–चौरा में व्यावसायिक संगीतज्ञों के परिवार में हुआ। इनकी जन्म तिथि में मतभेद है। कहीं–कहीं 18 व 19 जुलाई भी है। पं० गुदई महाराज जी ने अपने साक्षात्कार में बताया है। कि ''मेरा जन्म 18 जुलाई, 1920 को बनारस में हुआ है। जिस जगह सन्त कबीर छोटे से बड़े हुये, वहीं मेरे मकान की नींव थी। मेरे गुदई नाम घर का है, लोग सामता प्रसाद के नाम से जानते है"।[1] आपके पिता श्री हरिसुन्दर मिश्र (बाचा मिश्र) एक अच्छे तबला वादक थे। ''बाचा मिश्र की पाँच सन्तानों में दूसरे नम्बर के पंडित सामता प्रसाद जी थे। इनकी बड़ी बहिन विट्टन देवी, छोटी बहिन सिट्टन देवी, व मनक्का देवी, तथा छोटा भाई कामता प्रसाद मिश्र (सुधई महाराज) थे। पं० सामता प्रसाद जी की उम्र 8 वर्ष की थी जब इनके पिता का देहान्त हो गया था।''

पंडित जी की माँ भागमनी देवी की प्रेरणा व कठोर परिश्रम से ही सामता प्रसाद संगीत जगत के ख्याति प्राप्त तबला वादक बने। उनकी माता भागमनी देवी स्वयं एक संगीतज्ञ परिवार से थी। उनके पिता पं० शिवदास जी वाराणसी के राजा ईश्वरी नारायण सिंह के राज

दरबार में थे। उनकी माता जी चाहती थी कि उनका पुत्र तबला जगत का अच्छा ज्ञाता बनें। वह स्वयं बहुत अच्छी ढोलक बजाती थी। वह एक कर्मठ महिला थी। सन् 1929 में पति की मृत्यु के उपरान्त उन्होंने अपनी पाँच सन्तानों का पालन–पोषण किया। उन्होंने बड़ी गरीबी में जीवन–यापन किया। उस समय समाज के लोगों ने उनकी कोई सहायता नहीं की थी। स्वयं गुदई महाराज के शब्दों में ''पिताजी मरे तो गरीबी रही। आठ साल से लेकर छब्बीस की उम्र तक समाज वालों ने दबाने की बहुत कोशिश की। अपना एक कच्चा मकान था, उसे आठ रूपया महीने पर किराये पर दे दिया और खुद बगल में भतीजे के मकान में रहने लगे। माँ मुझे चार बजे भोर में उठा देती थी तथा कहती थी कि इस समय देवता लोग विद्या बाँटा करते है, इसी समय रियाज किया करो। वह खुद पन्सारी की दुकान से सुपारी लाती और आठ बजे सुबह तक काटा करती। उन्हें चार आना रोज मिलता था। वह पिताजी का तबला बजाया करती थी तथा उन्होंने कई बोल मुझे बताये।"[12]

माँ भागमनी देवी गुदई महाराज का ख्याल रखती थी। अभ्यास की अवधि का ध्यान रखती तथा उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती थी। गत, टुकड़ा, फर्द, रेला, ठेका आदि का पंडित जी को रियाज करवाती थी। पति की मृत्यु के उपरान्त अपनी पाँच सन्तानों के लालन–पालन हेतु और विपन्नता में रोज चार आने की सुपारी काट–काट कर संघर्षमय जीवन यापन किया। माँ के संघर्षमय जीवन के विषय में ग्रेट मास्टर 1986 में साक्षात्कार में पंडित जी ने कहा कि ''मैं जिस संघर्ष में जिन परेशानी से इस उमर तक पहुँचा हूँ। मैं वह बात आपके सामने पेश कर रहा हूँ, छोटी उम्र में हमारे पिता तबला सम्राट बाचा महाराज जी का स्वर्गवास होने के बाद हमारी माँ की परेशानी बढ़ती गई कि मैं उनका बयान नहीं कर सकता और समाज वालों ने हमारा साथ नहीं दिया। उस वक्त जब हमारे पिता का स्वर्गवास हुआ उस वकत हमारी माँ की बड़ी बहिन (मौसी) थी उन्होंने मुझे सान्त्वना दी मेरी माँ को भी सान्वना दी मुझे गोद में उठा लिया, गोद में उठाने के बाद कहा कि क्यों रोता है तूँ ? मैंने कहा मुझे तबला कौन सिखायेगा। मौसी बोली मैं अपने पुत्र से इसको तबला ऐसा बताऊँगी कि एक दिन

हिन्दुस्तान में नाम करेगा। उनके (मौसी) पुत्र बिक्कू महाराज थे वह मेरे दूसरे गुरू थे। उन्होंने ही पिताजी के मरणोपरान्त मुझे तबले की शिक्षा दी। वह मुझे घनघोर अभ्यास कराते। जब घर वापिस आता तो माँ सान्त्वना देती थी कि बेटा घबराओं मत एक रोज तुम बहुत बड़े तबला वादक बनोगे। लेकिन तुम को सुबह चार बजे उठना है जिस वक्त देवता लोग विद्या बाँटते है। उस वक्त हमारी स्थिति ठीक नहीं थी बड़े गरीबी के हालात थे। मेरी माँ बनिये की दुकान से चार सौ सुपारी लाती थी और चार बजे मुझे उठाती थी। डिबरी से सुपारी काटती थी और उठने के बाद से दस बजे सुबह तक मैं "धाधा तिट्टी धाधा तून्ना" बजाता था और फिर उसके बाद वह मुझे उठा देती थी कहती अब बहुत हो गया। उसके बाद वह कटी सुपारी लेकर बनिये की दुकान पर जाती थी जहाँ से उसे चार आना मिलता था।''[3]

गरीबी उनके हौंसलें को परास्त नहीं कर सकी बल्कि माँ की कठिन तपस्या (मेहनत) ने पंडित सामता प्रसाद को बहुत प्रेरित किया। इस प्रेरणा के फलस्वरूप उन्होंने 16 से 18 घण्टें का नियमित रियाज कर अपने तबले को माजा जिसका सफल परिणाम संगीत जगत को प्राप्त हुआ एक अद्वितीय तबला वादक, 'तबला जादूगर' पंडित गुदई महाराज के रूप में।. वह अपने समय के अद्वितीय तबला वादक कहलाये। उन्होंने अक्सर अपनी माता जी की कठोर तपस्या का जिक्र किया है। उनकी माँ भागमनी जी ने मेहनत मजदूरी करके उन्हें व उनके 4 भाई–बहिनों का पालन–पोषण किया। यह पीड़ा शायद ही कभी उनके हृदय से जाती होगी। क्योंकि उस समय की परिस्थिति का स्मरण अपने सभी संगीत प्रेमियों को उजागर करके यह बताने की चेष्टा की है कि कठिन परिस्थितियों में ही व्यक्ति का व्यक्तित्व साधारण से असाधारण हो जाता है, व्यक्ति के लिए कठिन परिस्थितियाँ ही वरदान बनकर सामने आती है इसका उदाहरण हमारे समक्ष पंडित सामता प्रसाद जी के रूप में है।

व्यक्ति को कभी भी अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए, विपरीत परिस्थितियों में भी तैयार रहना चाहिए। कहते हैं कि रात के बाद सवेरा अवश्य होता है यह प्रकृति का नियम है। हम सभी मनुष्य भी इसी नियम में बँधे है। यह नियम पंडित जी के साथ भी लागू हुआ कि जब

उन्हें सफलता मिली तो पीछे मुड़कर देखना नहीं पड़ा। कहने का तात्पर्य यह है कि जहाँ–जहाँ उनका वादन हुआ वह छाते चले गये। उनके तबला वादन को आज भी लोग सुनते है।

शोधार्थी बनारस घराने से सम्बन्धित है। उसे प्रारम्भ से ही बनारस घराने की शिक्षा स्व. पं. सत्यनारायण वशिष्ठ जी व उनकी सुपुत्री श्रीमती ऊषा शर्मा जी से प्राप्त हुई। उनके पश्चात् शोधार्थी ने बनारस घराने के तबला वादक स्व. पं० रमेश पारीक जी से शिक्षा ग्रहण की। जोकि पं० गुदई महाराज के शिष्यों में से एक थे। शोधार्थिनी का रूझान बनारस घराने की वादन शैली की ओर रहा है। जिसका परिणाम यह है कि आज वह बनारस घराने के मूर्धन्य तबला वादक पंडित सामता प्रसाद जी के संगीत जगत में योगदान को प्रस्तुत कर रही है। शोध के विषय में यह जानकारी देना आवश्यक था। शोधकर्त्री के गुरू एवं रमेश पारीक जी जब तबला वादन की शिक्षा देते थे तब वह कहते थे कि अगर आपको किसी से दोस्ती करनी है, तो आप अपने साज से करिये अपने तबले से करिये उससे रोज मिलिए उसका परिणाम भी मिलेगा और समय का सदुपयोग भी होगा। गुरूजी कहते थे कि संगीत का रियाज मानसिक तनाव को कम करता है।

इसी तरह पंडित सामता प्रसाद मिश्र उर्फ गुदई महाराज के विषय में उनके पुत्र कुमारलाल जी से साक्षात्कार के समय शोद्यार्थी को ज्ञात हुआ ''पिताजी के रियाज का कोई समय नहीं था, उन्हें जहाँ कही भी समय मिलता अपने तबले का बैग पूरा खोले बिना ही तबला बजाने लगते थे। उनके लिए तबला प्रथम था, बाकी सब कुछ गौण थे। जब भी कोई घर पर आता वह तबला वादन कर रहे होते थे तो वह अपने स्थान पर ही रियाज करते रहते साथ–साथ आगान्तुक से बातें भी करते थे चाय भी पीते–पिलाते पर उनका तबला बजाना जारी रहता था।''[4]

सामता प्रसाद जी का व्यक्तित्व सादगी भरा था। विश्व विख्यात होने पर उनके अन्दर घमण्ड नहीं था कि वह प्रसिद्ध कलाकार है। वह सादा जीवन यापन करते थे।उनके अन्दर जग–दिखावा नहीं था। वह इधर–उधर की बातें न किसी से करते थे और न ही किसी की

व्यर्थ बातें सुना करते थे। एक साधक के रूप में वह जीवन–यापन करते थे। अपना समय तबले की साधना में ही व्यतीत करते रहे।समाज में उनका एक रूतबा था।

उनके शिष्य पार्थ सारथी मुखर्जी के अनुसार ''उनके घर पर रोज 50 व्यक्तियों का भोजन बनता था। इसको वह देवी अन्नपूर्णा का आर्शीवाद मानते थे। जब पार्थ सारथी जी को भोजन कराया जाता था तो पंडित जी स्वयं दाल में शुद्ध देसी घी डलवाते थे साथ ही कहते थे कि खाओगें नहीं तो बजाने की ताकत कहा से मिलेगी, रियाज कैसे करोंगे।

पार्थ जी ने बताया कि उनके पिता स्व० श्री अशोक मुखर्जी जी ने भी तबले की शिक्षा गुदई महाराज से प्राप्त की। उनके पिता अशोक मुखर्जी जी उनके प्रथम गुरू थे, तत्पश्चात् वह सामता प्रसाद जी के सानिध्य में आ गये। उन्होंने बताया कि उनके पिता जी का पंडित जी से घनिष्ठ लगाव था। वह उनके तबले से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने अपने पुत्र (पार्थ जी) को भी संगीत शिक्षा के लिए पंडित जी के पास बनारस भेजा। जहाँ उन्होंने बहुत सी कठिनाईयों को सहते हुए तबला सीखा। वह निरन्तर अभ्यास व गुरू सेवा में लीन रहते थे।"[5]

पार्थ जी ने साक्षात्कार के समय न सिर्फ मेरी शंकाओं (शोधकार्य से सम्बन्धित थी) का निवारण किया अपितु मेरे शोधकार्य को एक गति प्रदान की। उन्हें यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि उनके गुरू जी पर शोधकार्य किया जा रहा है। एक प्रसंग उन्होंने बताया कि जब गुदई महाराज जी के गुरू बिक्कू जी महाराज बीमार हो गये, उस समय उनके घर पर कोई नहीं था। उस समय पंडित सामता प्रसाद जी ने बिक्कू जी की बहुत सेवा की। उनके स्वस्थ्य होने तक साथ रहे। बिक्कू जी के पुत्र गामा महाराज नेपाल नरेश के बुलावे पर नेपाल गये हुये थे।

जब उनके गुरू बिक्कू जी महाराज स्वस्थ्य हो गये उन्होंने यह आशीर्वाद दिया कि ''**बेटा तुझे कहीं पीठ नहीं देखनी पड़ेगी। तेरा तबला जहाँ बोलेगा उसके बाद किसी का तबला नहीं बोलेगा**''[6] गुरू के इस आर्शीवाद ने उनके लिए वरदान का काम किया।

जहाँ–जहाँ उनका तबला वादन होता था वहाँ के श्रोतागण सामता प्रसाद जी के तबले के दीवाने हो जाते थे। उनके तबले के जादू से ही उनका उपनाम 'तबला जादूगर' या **'जादूगर तबला वादक'** हो गया। उनके तबला–वादन में वह जादू था जो श्रोताओं को नतमस्तक करता था। वह अपने उपनाम 'तबला जादूगर' के नाम से प्रसिद्ध हुए। न सिर्फ अपने ही देश बल्कि विदेशों में भी संगीत–प्रेमी जनता उनके तबले की दिवानी थी, उनके तबले ने जो जादूगरी दिखायी उसका आज तक कोई सानी नहीं है।

पंडित जी एक सामाजिक व्यक्ति थे। उनका परिवार बहुत बड़ा था। वह स्वयं पाँच भाई–बहिन थे। सभी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पंडित जी ने बखूबी निभाया। पिता बाचा मिश्र जी का दायित्व भी निभाया।

3.1 उच्च संस्कारवान :–सामता प्रसाद जी उच्च संस्कारवान व्यक्ति थे। वह सादा जीवन उच्च विचार से ओत–प्रोत थे। संगीतज्ञ परिवार में उनका जन्म हुआ। उनके परदादा परतप्पूजी प्रताप महाराज अपने समय के प्रसिद्ध तबला वादक व काली के उपासक थे। अपने परिवार पर उन्हें गर्व था। उनके हृदय में अपने बड़ों के प्रति सम्मान की भावना थी। वह सुबह उठकर अपने इष्ट का स्मरण करते थे साथ ही अपने पूर्वजों को नमन करना नही भूलते थे। उन्होंने अपने पितामह, माता–पिता, गुरूओं का चित्र अपने कमरे में लगवाया था। वह सभी को नमन करके ही घर से बाहर जाते थे। वह अपने भाई–बहिनों, बेटा–बेटियों सभी को साथ लेकर चलते थे उनका आदर करते थे। उनका परिवार बड़ा था। उनकी प्रथम पत्नी श्रीमती तारा देवी जी से दो सन्तानें पुत्री देविका देवी (दिवगंत) तथा पुत्र पं.कुमार लाल मिश्र है। प्रथम पत्नी की मृत्युोपरान्त उनकी दूसरी पत्नी सीतांगनी देवी जी थी, जिनसे 8 सन्तानें हुई पुत्र कैलाश प्रसाद, श्री शिवशंकर मिश्र, रविशंकर, श्री गौरी शंकर (दिवंगत) तथा चार पुत्रियाँ, रेणुका देवी, रीता देवी, रीना देवी, वीना देवी, इन सभी को अपनी सामर्थनेनुसार शिक्षित संस्कारित किया। आज उनकी पुत्रियाँ अपनी गृहस्थी सम्भाल रही है।

शोधार्थी ने पंडित जी के दामाद किशोर मिश्र जी से साक्षात्कार कर बहुत सी बातों को जाना। किशोर जी अपने ससुर जी (पंडित जी) का बहुत सम्मान करते तथा उनकी वादन–शैली से भी प्रभावित है। किशोर जी शारदा सहाय' जी की शिष्य परम्परा से है। उनके घर पर संगीत का माहौल था। उन्होंने बताया कि "पंडित जी बहुत बड़े कलाकार होने के साथ–साथ उच्चकोटि के संस्कारवान पंडित थे। नियम से पूजा–पाठ करते थे। उन्हें अपने कुल पर नाज था तथा बनारस से बहुत लगाव रखते थे। वह कहते थे कि बम्बई वाले उनसे बहुत खुश है। उनकी पुत्री रीना जी से मुलाकात कर ज्ञात हुआ कि पिताजी बहुत बड़े कलाकार होने पर भी सादा जीवन यापन करते थे। उनके घर पर बहुत बडे–बडे लोगों का आना–जाना था। इसका उन्हें कभी घमण्ड नही रहा। वह हर बात को सीधे शब्दों में करते थे। उनके इसी आचरण के कारण आज हमें सम्मान मिलता है।"[7]

3.2 सादा जीवन :–तबला सम्राट पं० सामता प्रसाद जी उच्चकोटि के कलाकार होने पर भी साधारण व्यक्ति का जीवन यापन करते थे। उन्होंने कठिन तपस्या द्वारा संगीत को प्राप्त किया था। शायद इसी कारण उनमें दिखावा लेशमात्र भी न था। "वह शुद्ध बनारसी पंडितों की भाँति जीवन यापन करते थे। उन्हें काशी में लुंगी, बनियान व कंधे पर अंगोछा डाले हुए देखा जा सकता था Great Masters में साक्षात्कार के समय भी पंडित जी कंधे पर थैला लटकाए, हाथ में छाता पकड़े पैदल आते हुए दिखाई दिये थे। उन्हें शान–शौकत गाड़ी–बंगले का कोई शौक नहीं था"।[8]

परिवार में छोटे भाई कामता प्रसाद मिश्र उर्फ (सुधई महाराज) से उनका बेहद लगाव था। अपनी पत्नी, बहनों व बच्चों का बहुत ध्यान रखते थे। एस.डी.बर्मन के कहने पर भी वह अपने शहर बनारस को छोड़ते नहीं थे। बम्बई में काम खत्म होने पर सीधे बनारस आकर ही रूकते थे। बम्बई पत्नी व बच्चे साथ ही जाते थे। बनारस आने पर उनके निवास कबीर चौरा में भी सभी संगीत प्रेमी उनके तबले वादन के कायल थे।

3.3 घनघोर रियाजी :–पंडित सामता प्रसाद जी का जन्म एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ परिवार में हुआ था। छोटी उम्र में ही पिता का साया सिर से उठ जाने के कारण उन्हें अपने पिता का सानिध्य बहुत कम मिला। उनकी माता श्रीमती भागमनी देवी ने अद्‌भुत धैर्य एवं साहस का परिचय देते हुए येन–केन प्रकारेण पूर्ण सहनशीलता से सामता प्रसाद जी को तबले की ओर उन्मुखता के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और अनेक अभावों के बावजूद उन्हें दैनिक अभ्यास के लिए सदैव प्रोत्साहित करती रही।

स्वयं पंडित जी के शब्दों में, ''मेरी माँ ने अत्यन्त कष्ट सहकर, मेहनत मजदूरी करके हम पाँच भाई–बहिनों को पाला। कभी–कभी भूखे पेट सो जाना पड़ता था लेकिन ऐसी कठिन परिस्थिति में भी मैंने संगीत साधना नहीं छोड़ी। आधा पेट खाकर भी रियाज करता रहा। आज अनेक प्रकार की सुख–सुविधाओं के बीच पले ये मेरे बेटे उन कठिनाइयों का अहसास कैसे कर पाएगें।"[9]

पिता जी की मृत्यु के पश्चात् सामता प्रसाद शुरू में तो पिता के द्वारा सिखाई गई बन्दिशों को कठिन रियाज द्वारा माँजते रहे लेकिन कुछ समय बाद पं० विक्रमादित्य मिश्र उर्फ बिक्कू महाराज का शिष्यत्व ग्रहण किया। पं. बिक्कू जी महाराज ने सामता प्रसाद जी को अनेक वर्षो तक तबले की शिक्षा दी। छः सात घण्टे का रियाज जो कि पिताजी की निगरानी में शुरू किया था। जो बाद में तकरीबन सोलह घण्टे से अठ्‌ठारह घण्टे तक पहुँच गया। समय के साथ–साथ ठेका, टुकड़ा, फर्द, रेला, तिहाई, कायदा, गत जैसी बारीकियों को आत्मसात करते रहे।

3.4 गुरूभक्त :– पिता जी की मृत्यु के पश्चात् पंडित जी को तबले की शिक्षा बिक्कू जी महाराज के द्वारा प्राप्त हुई। अपने साक्षात्कार में भी उन्होंने बताया है– ''बिक्कू भईया मेरे गुरू थे जिनके आर्शीवाद से न सिर्फ मुझे तबले की शिक्षा मिली, अपितु एक तबला वादक के रूप में मेरी पहचान बन सकी। उन्होंने अपने पुत्रवतः मुझे शिक्षा दी। आज मैं जो कुछ भी हूँ उन्हीं की कृपा से ही हूँ। मेरे गुरूवर्य धुरन्धर तबला वादक पं. बिक्कू

जी महाराज एक मात्र ऐसे हिन्दु वादक थे जिन्हें 'खलीफा' की उपाधि से विभूषित किया गया था। वह भी मात्र 21 वर्ष की उम्र में। आज मैं जो कुछ हूँ उन्हीं की जूठन हूँ। मेरे हॉल में आप देख सकते हैं कि, माँ काली जिनका मैं भक्त हूँ की प्रतिमा के ठीक बगल में मेरे गुरू पं. बिक्कू महाराज जी की तस्वीर लगी है। हालांकि उस कमरे में मेरे पितामाह और पिता सहित कई अन्य विद्वानों के भी चित्र है लेकिन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान मैंने अपने गुरूवर को दिया।''[110]

3.5 **मातृभक्त** :–सामता प्रसाद जी ने अपने प्रत्येक साक्षात्कार में हर बार अपनी माता जी की कठोर तपस्या, मेहनत–मजदूरी का जिक्र किया है, वह कहते थे कि ''आज मैं जिस स्थान पर हूँ मुझे वहाँ तक पहुँचाने में मेरी माता स्व. भागमनी देवी जी का बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने मुझे कठिन रियाज कराया। इस तथ्य से मैं भी अन्ततः इन्कार नहीं कर सकता कि गुरू से बहुत कम ही सही लेकिन कुछ श्रेय तो मैं उन्हें भी देता हूँ।''[12]

पंडित जी के शिष्य जेरी मैसी जी ने साक्षात्कार के समय शोधार्थी को बताया कि "उनके परदादा, दादा, पिताजी, प्रसिद्ध तबला वादक थे इसकी चर्चा वह अक्सर करते थे। उनके अन्दर तबले के संस्कार बहुत गहरे थे जो शायद जन्म के समय से ही उनमें समाहित थे। इसी कारण पंडित जी की माता जी अपने पुत्र के विषय में जानती थी। वह अपने पुत्र (सामता जी) से कहती थी कि धैर्य रख एक दिन तू बहुत बड़ा तबला वादक बनेगा।''[13]

3.6 **विनम्रता की प्रतिमूर्ति** :–पंडित सामता प्रसाद जी में विनम्रता कूट–कूट कर भरी थी। उनका यही स्वभाव उनकी प्रसिद्धि में सहायक हुआ। "अपने लक्ष्य के प्रति उनका पूरा ध्यान था वह अपनी संगीत साधना में रत रहकर विनम्रता को कभी नहीं छोड़ते थे तबला वादन पर मंच प्रस्तुतीकरण में वह श्रोताओं को भी कहते थे कि माफ कीजियेगा, क्षमा चाहता हूँ जैसे शब्दों का सहारा लेते थे। उनके स्वभाव को कभी उग्र होते हुए नही देखा। अपनी भेटवार्ता में भी वह विनम्र ही दिखाई देते थे। वह साक्षात्कारकर्त्ता को पूरा सहयोग देते हुए उनकी शंकाओं का निवारण भी विनम्रता पूर्वक करते थे। उनका

व्यवहार इतना सरल था कि जरूरत पड़ने पर वह किसी भी कलाकार (चाहे वह छोटा हो या बड़ा) के साथ तबला बजाने के लिए तैयार रहते थे। वह कभी–भी तबला–वादक के साथ लडन्त–भिडन्त नहीं करते थे।"[14]

3.7 असीमित धैर्य :–संगीताकाश में जिस समय पं. सामता प्रसाद जी उर्फ गुदई महाराज जैसे नक्षत्र का उदय हुआ था। उस समय कई सितारे अपनी पूरी आभा के साथ जगमगा रहे थे। एक तरफ कंठे महाराज, उस्ताद अहमद जान थिरकवा और तबला शिरोमणि गामा महाराज की तूती बोल रही थी, तो दूसरी ओर अनोखेलाल, अल्लारक्खा, किशन महाराज और हबीबुद्दीन खाँ तथा करामत हुसैन जैसे युवा कलाकार पं० सामता प्रसाद जी को कड़ी चुनौती के देने लिये खड़े हुये थे। पंडित जी ने इन सभी सितारों से अपनी अलग पहचान बनायी। उन्होंने इसके लिए लम्बे समय तक कठिन रियाज किया। अपने परिवार की आर्थिक विपन्नता दूर करने हेतु 16 से 18 घण्टे तक घनघोर रियाज कर, अपने असीमित धैर्य का परिचय दिया।

सामता प्रसाद जी ने अपने लिए रास्तों का स्वयं निर्माण किया और अपनी मंजिल की तरफ अकेले ही निकल पडे। और जब सफलता मिली तो उसका एक सिलसिला ही चल पड़ा। इन सब के पीछे उनका धैर्य ही था जो उनको ढाढँस बँधाता रहा कि एक न एक दिन सफलता अवश्य मिलेगी। कहा भी गया हैः–

धीरे–धीर रे मना, धीरे सब कुछ होय।

माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय।।

कहने का तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति धैर्यवान होकर धीरे–धीरे, सोच समझ कर निरन्तर अपना कार्य करता रहता है, अपने कर्त्तव्यों का पालन करता हैं, उसे एक दिन सफलता की प्राप्ति अवश्य होती है। ऐसा गुणीजनों का कथन है।

पंडित सामता प्रसाद जी ने भी अपने कर्त्तव्यों का पालन किया, रियाज किया, जिसका फल उनको प्राप्त हुआ जो कि जीवन के अन्तिम समय तक चलता रहा। जब उनको देहान्त

हुआ उससे 20 मिनट पहले ही वह तबला एकल वादन की प्रस्तुति दे रहे थे।31 मई 1994 को पूने में भीमसेन जोशी जी द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लेने गये थे वहाँ पर उनको दिल का जानलेवा दौरा पड़ा, जिससे उनका स्वर्गवास हो गया।

आपके धैर्य का एक नमूना यहॉ प्रस्तुत है। गुदई महाराज जी ने अपने साक्षात्कार में जीवन की कुछ विशिष्ट घटनाओं का रदस्योद्घाटन किया हैः "आपको एक ऐसी घटना के विषय में बता रहा हूँ जिसने मेरे लिए सफलताओं के द्वार खोल दिये। यह मेरा पहला बड़ा सार्वजनिक कार्यक्रम था, तब तक संगीत की दुनिया के लिए मै एक अपरिचित नाम था। मेरी कोई ख्याति नहीं थी। यह घटना सन् 1942 की है। इलाहाबाद में आयोजित अखिल भारतीय संगीत समारोह में किसी की सिफारिश पर मुझे भी बुला लिया गया। अब मै वहाँ पहुँच तो गया लेकिन बेकार! एक से एक बड़े कलाकार वहाँ आमन्त्रित थे किन्तु मुझ जैसे नितान्त नए और अपरिचित कलाकार के साथ बजाने का जोखिम लेने को कोई तैयार नही था। सब यही सोचकर डर रहे थे कि पता नहीं कैसा बजायेगा ? कहीं मेरा कार्यक्रम न खराब कर दे। एक के बाद एक दिन बीतते जा रहे थे। एक दिन अचानक मेरा सामना उस्ताद अलाउद्दीन खाँ से हो गया। मेरे अभिवादन के जबाव में आर्शीवाद देते हुए उन्होंने मेरा नाम, काम और गुरू का नाम पूछा? फिर पूछा मेरा कार्यक्रम किसके साथ है ? मेरे यह कहने पर कि मुझे अपने साथ अवसर देने के लिए कोई तैयार नहीं है।

बाबा ने मुस्कुराते हुये मुझसे पूछा ? मेरे साथ बजाओगे ? यह सुनकर में चौका। इतने बड़े कलाकार के साथ मैं क्या बजा पाऊँगा ? मन के एक कौने में डर की भावना उभरी। तभी मुझे अपने गुरू बिक्कू भैया का ब्रह्मवाक्य याद आया.....याद क्या आया.....ऐसा लगा जैसे अभी–अभी वह मेरे कान में कह रहे हो कि 'मंच पर कभी अपने को छोटा या कमजोर नही समझना चाहिए। मुझे याद आया कि जब आते समय मैंने उनका चरण स्पर्श किया था, तब उन्होंने कहा था, ''तुम्हें तो मेरा नाम ऊँचा करके आना है।

"उसी शाम मंच पर जब मैं बाबा अलाउद्दीन खाँ के साथ बजाने बैठा तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे हॉल के मध्य.....ऊपर शून्य में मेरे बिक्कू भैया खड़े मुस्कुरा रहे है। मैंने उस आकृति को नमन किया और बाबा के साथ खूब जमकर बजाया। बाबा भी मुझे बजाने का खूब अवसर दे रहे थे। काफी देर तक चला यह कार्यक्रम जब समाप्त हुआ तो चारों तरफ मेरा ही नाम था। फिर तो कई दूसरे लोगों के आग्रह पर उनके साथ भी बजाया उस समारोह में ।उसके बाद से मुझे कभी पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ा।"[14]

उपरोक्त वाक्या पंडित जी के साक्षात्कार के समय का है, जिसमें पंडित जी ने अपने जीवन की सच्चाईयों से अपने प्रशसकों को रूबरू कराया। उन्होंने बताया कि इलाहाबाद में आयोजित अखिल भारतीय संगीत समारोह में कोई भी कलाकार उन्हें साथ बजवाने के लिए तैयार न था और एक समय ऐसा भी आया जब संगीत प्रेमी जनता ने कहा कि हम तो सिर्फ सामता प्रसाद जी का ही तबला सुनेगें।

आगे एक और वाक्य! पंडित जी ने बताया कि "सन् 1955 में सितारा देवी के नृत्य के साथ मोतीहारी में बजाकर उठा था। मेरा यह कार्यक्रम काफी अच्छा हुआ था। चारों तरफ मेरी तारीफ हो रही थी, तभी उस समय के प्रसिद्ध तबला वादक 'अनोखेलाल मिश्र' के कुछ अपने लोगों ने मंच पर आकर आयोजकों की अनुमति के बगैर ही यह घोषणा की कि सामता प्रसाद अब अनोखेलाल के साथ जुगलबन्दी बजाएगें। उस समय अनोखेलाल मुझ से कहीं अधिक प्रसिद्ध थे, लेकिन मेरे उस दिन के तबला वादन से श्रोता इतने अभिभूत थे कि सबने एक स्वर में कह दिया कि आज हम सामता प्रसाद के अलावा और किसी का तबला नही सुनेंगे।"[15]

3.8 अद्भुत व्यक्तित्व :– पं० सामता प्रसाद जी स्वतन्त्र प्रकृति के कलाकार थे। वह बनारस घराने के कुशल प्रतिनिधि तबला वादक थे। उनके वादन में तैयारी तथा बोलों की स्पष्टता विशेष रूप से झलकती थी। वह घनघोर रियाजी थे। इसी कारण वह 'तबला जादूगर कहलाये। उन्होंने अपने जीवन की एक मार्मिक घटना का वर्णन स्वयं ही किया है

गुदई महाराज की पिटाई का हाल उन्हीं की जुबानी :

''मैं नौ साल का था, तभी मेरे पिताजी की मृत्यु हो गई। पिताजी के बाद मैंने अपने मौसेरे भाई बिक्कू महाराज जी से तबला सीखना शुरू किया। थोड़ी गलती होती तो वे मार बैठते। उनके हाथों बहुत मार खाई। लेकिन जो मार आज पचपन साल की उम्र में मुझे याद है, वह दूसरी तरह की मार थी।

प्रसिद्ध तबला वादक स्वर्गीय कठें महराज के भाँजे गायक कमल मिश्र, उनके साथ मजाक चला करता था। मैंने एक बार उनसे कहा, ''तुम इतने अच्छे घराने के हो, फिर भी ढंग से गाते–वाते क्यों नहीं ? उन्होंने यह बात कंठे जी से कह दी। दो महीने बाद एक जलसे में कमल जी के गायन का कार्यक्रम था, मुझे उनके साथ बजाने को कहा गया। मैं सीधा–सादा तो बजा लेता था, लेकिन झपताल की तिहाई मुझे नही आती थी। मैंने एक बार कोशिश की जब तिहाई नहीं निकली तो कंठे जी ने मेरे तबले की जोड़ी पर जोर से दोनों हाथ मारे। बोले, बस करो। तबला इस तरह पीट रहे हो कि कान में दर्द होने लगा।

मैं कमजोर था, पिताहीन। भरी महफिल में इस बेइज्जती से मेरी आँखों में आँसू आ गए, घर आकर में फूट–फूट कर रोया। माँ ने बहुत समझाया इस तरह हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। तुम्हें तो और दुगुने जोश से रियाज करने में जुट जाना चाहिए, ताकि वही लोग अपने–आप तुम्हारी तारीफ करने लगे। मैंने माँ की बात मान ली।

इस घटना के नौ–दस साल बाद कंठे जी के यहाँ नवरात्र में एक सप्ताह का जलसा हुआ। उसमें मैंने पूरी मेहनत से बजाया। कार्यक्रम खत्म होते ही कंठे जी ने मुझे लिपटा लिया वह बोले ऐसा तबला बजाया है कि लगा जैसे साक्षात दुर्गा जी खड़ग लेकर आ रही है।''[17]

पं० गुदई महाराज पूर्णतया साधनाहीन थे, जिन्होंने अपने सद्गुणों व प्रयासों से उन्नति के उच्च शिखर तक पहुँचकर सबकों हिला दिया। यह कहा भी जाता है कि परिश्रम शीलता, साहस, धैर्य, सद्बुद्धि और श्रेष्ठ कार्यों में पराक्रम ये गुण जिस व्यक्ति में होते हैं उन पर देवताओं की प्रसन्नता बनी रहती हैं।

3.9 जीवन संध्या :–गुदई महाराज की इच्छा थी कि उनकी मृत्यु तबला बजाते समय हो। ऐसा हुआ भी। 31 मई 1994 को अपनी मृत्यु से 20 मिनट पूर्व ही आपने नाद साधना पुणे में भीमसेन जोशी जी द्वारा आयोजित कार्यशाला में अस्वस्थ होने पर भी उत्कृष्ट तबला वादन किया। आपको दिल का जानलेवा दौरा पड़ा। सदा के लिए संगीत प्रेमियों को छोड़कर चले गये। अभी आपकी उँगुलियों में दम था और 74 वर्ष की उम्र में भी आप श्रोताओं को आनन्दित कर रहे थे। परमात्मा के आगे किसी की नहीं चली।

पंडित जी का व्यक्तित्व घनघोर रियाजी, संगीत साधक के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है। ऐसे सिद्ध तबला वादक को शोद्यार्थी का कोटि–कोटि प्रणाम।

पं० गुदई महाराज तबले के जादूगर कहलाये। आपने अपने गुरुजनों के पद चिन्हों पर चलकर उनके द्वारा दी गई तबला शिक्षा को अपने कठोर रियाज के द्वारा चमत्कार प्रदान किया। तबले के इस जादूगर की जादूगरी को प्रश्रय देने वाले गुणी जनों का परिचय निम्नवतः है :

3.10 बनारस घराने के तबला वादकों का संक्षिप्त परिचय

3.10.1 पं० राम सहाय मिश्र

बनारस घराने के संस्थापक पं० रामसहायजी का जन्म उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी वाराणसी में सन् 1797 ई० में हुआ था। वह जौनपुर के गोपालपुर गाँव के निवासी थे। इनके पिता बनारस आकर बस गये थे। इनके दादा पं० सियासहाय थे। अतः तबले की प्रारम्भिक शिक्षा इन्होंने घर पर ही अपने पिता पं० प्रकाश सहाय तथा चाचा पं० प्रगास सहाय, शारदा सहाय से प्राप्त की थी। तबले की उच्च स्तरीय शिक्षा इन्होंने लखनऊ घराने के उस्ताद मोदू खाँ से प्राप्त की थी। एक बार इनका वादन सुनकर उस्ताद मौदू खाँ ने इनके पिता से इन्हें तबले की शिक्षा देने के लिये 12 वर्ष के लिये माँग लिया था। उस्ताद मौदू खाँ ने अपने तबले की पूरी शिक्षा पं० राम सहाय जी को दी थी। परन्तु अपने परिजनों के दबाव में उस्ताद मौदू खाँ ने अपनी पूरी विद्या पं० राम सहायजी से गुरूदक्षिणा के रूप में वापस माँग ली। तब

पं० राम सहायजी को तबले के एक नये घराने के निर्माण का निर्णय लेना पड़ा। इन्होंने अपने अनुज पं० जानकी सहाय और भतीजे पं. भैरव सहाय को तबले की विधिवत् शिक्षा दी थी। उन्होंने अपने जीवन में पाँच शिष्य बनाये, जिनके नाम है, पं० प्रताप जी, पं० भगत जी, पं० रामशरण जी, पं० यदुनन्दन जी. पं० बैजू जी कहते है कि इन्होंने 'बनारस बाज' के नाम से एक पुस्तक भी लिखी थी, परन्तु यह अब उपलब्ध नही है। इनकी मृत्यु मात्र 46 वर्ष की आयु में सन् 1843 के आस–पास वाराणसी में हुई।

3.10.2 पं० प्रताप महाराज

आपका जन्म बनारस के कबीरचौड़ा स्थान में हुआ था। इनके पूर्वज जौनपुर के मड़ियाहूँ तहसील के ग्राम गोपालपुर के निवासी थे तथा अपनी कला की उत्तरोत्तर वृद्धि की कामना के लिए बनारस आ गये थे। आपके पिता पं. गणेश मिश्र भी कुशल तबला वादक थे। बचपन से ही आपने तबला वादन की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की। संगीत जगत में आप परतप्पू महाराज के नाम से भी जाने जाते है।

पं० राम सहाय जी के प्रमुख शिष्यों में आपका नाम बड़े आदर सम्मान के साथ लिया जाता है। आपने तबला वादन की उच्च शिक्षा पं० राम सहाय जी से प्राप्त की। जिसके फलस्वरूप आपके तबला वादन की कला विस्तृत, एवं समृद्ध हो गई। आप नियमित अभ्यास के कठोर व्रती थे।

अपने तबला वादन में अपरिमित प्रभाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से विन्ध्याचल के 'सिद्धपीठ कालीखोह' स्थित काली माँ की प्रतिमा के समक्ष कठोर साधना कर अपराजेय सिद्धि प्राप्त की। तबले की कठिन साधना करते हुये अभ्यास की समयावधि 18 से 20 घण्टे तक कर दी, जिससे आपके वादन में चमत्कार पैदा हो गया।

इसके पश्चात् आप बनारस आ गये। इस साधना के फलस्वरूप आपके चमत्कारी वादन से आपकी यश कीर्ति बढ़ती गई और अनेक प्रान्तों में आपकी प्रसिद्धि फैल गई। जिसमें विशेष रूप से नेपाल के संगीत प्रेमी राजा शमशेर बहादुर राणा ने अपने दरबार की शोभा बढ़ाने हेतु

आपको आमंत्रित किया। नेपाल दरबार में आपने अपने चमत्कारी तबला वादन से शाही दरबार में मान सम्मान प्राप्त किया। नेपाल में आपने अनेक शिष्यों को तबले की शिक्षा प्रदान की। आपने अपने चमत्कारी, प्रभावशाली एवं विलक्षण वादन शैली से नेपाल दरबार के अन्य कलाकारों को अपनी कला प्रतिभा से प्रभावित कर हमेशा के लिए उन्हें अपना आत्मीय प्रशंसक बना लिया। ऐसा कहा जाता है कि नेपाल दरबार में आपकी दिनोदिन बढ़ती प्रतिष्ठा से कुछ अन्य कलाकार ईर्ष्या रखने लगे और आपके सम्मान को ठेस पहुँचाने के लिए उपयुक्त अवसर की तलाश में रहते थे।

संयोग वंश उस युग के प्रतिष्ठित गायक 'चाँद खाँ' 'सूरज खाँ' नेपाल दरबार में किसी अवसर पर अपना कार्यक्रम देने के लिये उपस्थित हुये। गायक बन्धु की विशेषता थी कि ये सम के स्थान को छुपा लेते थे, जिसके कारण कोई भी तबला वादक संगत करने के लिये इनके साथ तैयार नही होता था। प्रताप जी से ईर्ष्या रखने वाले कलाकारों ने षडयन्त्र रचकर उन्हें संगत के लिए महाराज के कान भरे। महाराज का संदेश लेकर संदेश वाहक प्रताप जी के आवास पर पहुँचा और 'चाँद खाँ' 'सूरज खाँ' के साथ संगति करने की सूचना दी। उस समय आप कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। दरबार की आज्ञा टालना नामुमकिन था। अतः उस अवस्था में भी आपने अपनी स्वीकृति दे दी। दूसरे दिन कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें आपने गायक बन्धु के साथ अनूठी सूझबूझ से विलक्षण संगत कर गायक बन्धु की छलेवापूर्ण सम स्थानों की भरपूर संगति की एवं उपस्थित श्रोतागण को अपने विद्धतापूर्ण तबला वादन का लौहा मनवाया। आपके इस अद्‌भुत वादन कला के चमत्कार से अति प्रसन्न महाराज नेपाल नरेश ने भरे दरबार में आपको अशर्फियों से नहलाया और लगभग तीन लाख अशर्फियाँ आपके ऊपर न्यौछावर कर दीं। जब आपको पता चला कि यह षडयन्त्र दरबार के कलाकरों द्वारा रचा गया था। तब आपने खिन्न मन से हमेशा के लिए नेपाल दरबार छोड़ने का मन बना लिया और उपयुक्त अवसर पर महाराज को अपने निर्णय से अवगत कराया। जिसे सुनकर महाराज वियोग की कल्पना से व्यथित हो गये।

महाराज ने दुखी मन से आपको विदा किया। आपकी सुरक्षा के लिए महाराज ने अपने सुरक्षा कर्मियों को आपके साथ भेजा। आप अपने अटल निर्णय के फलस्वरूप बनारस आ गये।

नेपाल दरबार से बनारस तक अपने अपनी वादन सिद्धि से यथेष्ठ धन, यश, मान–सम्मान अर्जित कर देशव्यापी ख्याति अर्जित की। आप बनारस में ही सम्भवत् अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दिवंगत हुये। आपके पौत्र बाचा जी (हरिसुन्दर महाराज) के पुत्र सामता प्रसाद ऊर्फ गुदई महाराज उच्च कोटि के तबला वादन हुये। वह अपने वादन से पूर्व आपका नाम लेना नहीं भूलते थे वह कहते थे कि आपके सामने प्रताप महाराज का चीज पेश कर रहा हूँ अर्थात् वह प्रताप महाराज से बहुत प्रेरित थे।

3.10.03 पंडित दरगाही मिश्र

पं० दरगाही मिश्र का जन्म सन् 1840 ई० में राम सहाय जी के प्रमुख शिष्य पं० रामशरण जी के घर में हुआ था। पं० रामशरण मिश्र को बहुत दिनों तक पुत्र प्राप्ति नही हुई, तब अपने गुरू की आज्ञा पर बनारस से अजमेर तक की तीन बार पैदल यात्रा की, और ख्वाजा साहब की दरगाह पर पुत्र के लिए मन्नतें माँगी। फलस्वरूप जिस पुत्र की प्राप्ति हुई, उसे दरगाह के आर्शीवाद से प्राप्त मानकर उसका नामकरण किया गया दरगाही मिश्र।

पंडित जी ने तबला वादन की उच्च शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की थी। साथ ही आपने गायन एवं सितार की विधिवत शिक्षा उस समय के विख्यात गायक पं० शिवसहाय जी से प्राप्त की थी।

संस्थागत संगीत शिक्षा एवं थियेटर के विकास में पंडितजी की महत्वपूर्ण भूमिका थी। आपने बनारस में **'संगीत समाज'** नामक विद्यालय को स्थापित किया। इसी विद्यालय में आपने चतुर पंडित भातखंडे जी को सितार पर श्रुतियों का क्रियात्मक प्रयोग करके दिखाया था। इन्ही के सुझाव पर भातखंडे जी ने संगीत शिक्षा के विद्यालयीन स्वरूप हेतु व्यापक स्तर पर प्रयोग शुरू किया था।

सम्पूर्ण देश में अपनी कला के द्वारा बनारस का नाम गौरवान्वित किया। आपके अनेक शिष्यों ने संगीत परम्परा को आगे बढ़ाया। आपके प्रमुख शिष्यों में आपके पुत्र बिक्कू महाराज, पं० गोवर्धन मिश्र, पं० सरयू प्रसाद मिश्र क्रमशः तबला गायन एवं सांरगी के विद्वान हुए। पौत्र गामा महाराज, एवं श्री चन्द मिश्रा तथा शिष्यों में पं० सियाजी महाराज, पं० बड़े रामदास जी, विधाधरी देवी, जद्दन बाई, मुंशी राम जी, वंशी जी, कोका जी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है। पं. दरगाही मिश्र पुत्रों, शिष्यों एवं संगीत संसार को सदा के लिए सन् 1926 में अपने नश्वर शरीर को त्याग चिर निद्रा में विलीन हो गये।

3.10.4 पं० हरिसुन्दर मिश्र (बाचा महाराज)

आपका जन्म बनारस के प्रतिष्ठित संगीतज्ञ परिवार में हुआ था। आपके पिता श्री जगन्नाथ मिश्र अपने समय के श्रेष्ठ तबला वादक थे। आपकी तबले के प्रति रूचि, निष्ठा और कठिन साधना ने आपको अल्प समय में ही संगीताकाश में प्रतिष्ठित कर दिया। संगीत जगत में आप 'बाचा महाराज' के नाम से विख्यात थे।

बाचा महाराज का दैनिक अभ्यास ऐसा होता था कि रात्रि में भी उनका वादन लोगों को सहज ही आकर्षित कर लेता था। आपके वादन में दाँये–बाँयें का अच्छा समन्वय हुआ करता था। आप अपने समकालीन तबला वादकों के भी प्रिय थे। आपके समकालीन तबला वादकों में पं० मौलवीराम मिश्र, पं० कंठे महाराज आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है। आपका सानिध्य पुत्र गुदई महाराज को बहुत कम प्राप्त हुआ परन्तु आपके पद चिन्हों पर चलकर गुदई महाराज विश्व विख्यात तबला वादक बने।

3.10.5 पंडित विक्रमादित्य मिश्र

आपका मूल नाम विक्रमादित्य मिश्र था, परन्तु संगीत जगत में आप बिक्कू महाराज के नाम से प्रसिद्ध थे। आपका जन्म बनारस के रामापुरा में सन् 1863 ई. में हुआ था। आपके पिता पं० दरगाही मिश्र अपने समय के कुशल संगीतज्ञ थे। आपको परम्परानुसार 5 वर्ष की अवस्था में

गुरू घराने के वंशज पं. बलदेव सहाय जी द्वारा शिक्षा प्रारम्भ हुई तथा कुछ समय के पश्चात् गुरू की आज्ञा से पिता पं. दरगाही मिश्र ने तबले की शिक्षा दी।

पं० बिक्कू महाराज ने अपना बाल्यकाल बनारस के रामापुरा स्थान पर व्यतीत किया है। जब आपके पिताजी ने बनारस नरेश का राजाश्रय त्यागा, तब आप बनारस के कबीर चौड़ा नामक स्थान पर आकर रहने लगे। यद्यपि आपकी स्कूली शिक्षा नही हुई थी, फिर भी संस्कृत, हिन्दी एवं फारसी भाषा पर आपकी अच्छी पकड़ थी। बिक्कू महाराज ने अपने पिता पं० दरगाही मिश्र से तबला के अतिरिक्त गायन और सितार की भी शिक्षा प्राप्त की थी। इसलिए इन तीनों विषयों के प्रकाण्ड विद्वान थे, परन्तु मुख्य विषय आपका तबला ही था।

आपको तबले की विभिन्न वादन शैलियों में भी दक्षता हासिल थी तथा सभी घरानों की विशिष्ट बन्दिशों का विशाल भंडार था। वादन की शुद्धता, कर्णप्रियता और मोहकता प्रारम्भ से ही आपकी विशिष्टता थी। इसलिये आपके शिष्यों में यह गुण विद्यमान रहे। आपके शिष्य सामता प्रसाद 'गुदई महाराज' में उक्त विशेषता थी।

आप मात्र 23 वर्ष की आयु में भारत वर्ष के विद्वान कलाकारों के द्वारा 'खलीफा' की उपाधि से सम्मानित किये गये। आपने अपने जीवन काल में बहुत ही सरलता के साथ अनेकों शिष्यों को तबला वादन की शिक्षा दी, जिनमें कुछ नाम इस प्रकार से है : रामायण प्रसाद उर्फ गामा महाराज जी (पुत्र) पं० सामताप्रसाद मिश्र, मन्नू जी मृदंगााचार्य, भोलनाथ पाठक, लल्लन बाबू, वासुदेव, पुन्नीलाल, रघुनाथ जी, गणेशी जी तथा मकबूल खाँ आदि।

आप अपनी अमिट छाप एवं भावी कलाकारों के लिए अपने उच्च आदर्श की ज्योति जलाकर सन् 1945 के मार्च महीने में संगीताकाश में विलीन हो गये। आपके आर्शीवाद व कठिन रियाज ने गुदई महाराज को राह दिखाई व वह अपनी संगीत साधना में सफल हुये। आज उनके तबले को याद किया जाता हैं।

3.10.6 पं० अनोखेलाल मिश्र

बनारस के प्रसिद्ध तबला वादक पं० अनोखेलाल जी का जन्म 1914 में ग्राम–ताजपुर–समकालीन, जिला चंदौली में हुआ था। आपके पिता पं० बुद्धू प्रसाद मिश्र एक प्रसिद्ध सारंगी वादक थे तथा बनारस में ही रहा करते थे। जब यह मात्र ढाई वर्ष के ही थे इनके पिता का तथा 6 वर्ष की अवस्था में माता का स्वर्गवास हो गया। आपका पालन–पोषण दादी श्रीमती जानकी देवी द्वारा किया गया। जानकी देवी आपको लेकर बनारस आ गई तथा आप पं. भैरव प्रसाद मिश्र से तबला वादन की शिक्षा प्राप्त करने लगे। आपका बचपन माता–पिता के बिना अत्यन्त कष्ट पूर्ण बीता था।

गुरू के सानिध्य में इन्होंने कठोर परिश्रम किया तथा सोते–जागते हर समय केवल तबले के लिए ही समर्पित हो गये। ये प्रतिदिन आठ–दस घण्टे अभ्यास करते थे तथा धीरे–धीरे अभ्यास बढ़ाते हुए अठारह घण्टे तक कर दिये। आप पं० दाऊ जी मिश्र के गायन तथा पं० मोहनलाल व प्रसिद्ध नृत्यांगना शिवकुँवर बाई के कथक के साथ प्रतिदिन घण्टों अभ्यास करते थे। मात्र सोलह वर्ष की अवस्था में ही आप स्वतन्त्र वादन तथा संगति दोनों ही में प्रवीण हो गये थे। गुरू भक्ति एवं नम्रतापूर्ण स्वभाव के कारण आपकी प्रसिद्धि बढ़ने लगी तथा आप तबले के अद्वितीय कलाकार हो गये। आपके जैसा 'ना' धिं धिं ना' किसी ने नहीं बजाया। आपको 'ना धि धिं ना' के 'जादूगर' भी कहा जाता है। इन्होंने अनेक प्रसिद्ध कलाकारों के साथ संगति की तथा तबला जुगलबन्दी भी की जिनमें संगति के लिए प्रमुख है– उस्ताद फैयाज खाँ पं०, ओंकारनाथ ठाकुर, पं० वामन नारायण ठाकुर, उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, पं० विनायक राव पटवर्धन, बंडे गुलाम अली खाँ, वी०जी० जोग, श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी, गिरिजा देवी आदि और भी महान संगीतज्ञों के साथ आपने तबला वादन किया था। दिल्ली से प्रसारित होने वाले राष्ट्रीय कार्यक्रम में भी इन्होंने कई बार बजाया था। सन् 1952 में ये भारतीय सांस्कृतिक प्रतिनिधि मंडल के साथ अफगानिस्तान भी गये थे। सन् 1955 में भारत सरकार के संस्कृति दूत के रूप में आप नेपाल गये थे। जीवन के अंतिम समय में आप गैंगरिन रोग से पीड़ित रहे।

आपका निधन 10 मार्च 1958 प्रातः 8 बजे बनारस में हुआ। इनके शिष्यों में स्व० पं० नागेश्वर प्रसाद, पाँचू महाराज, स्व० पं० रामजी मिश्र, पं० रामसुमेर मिश्र स्वं. पं० महापुरूष महाराज, स्वं० पं० छोटेलाल मिश्र, पं० ईश्वर लाल मिश्र आदि प्रमुख है। आपके एक शिष्य पं० प्रेम नारायण सिंह ने 'नाधि धिं ना' के जादूगर अनोखे लाल मिश्र" नामक एक पुस्तक लिखी है। जिसमें आपके व्यक्तित्व का विवरण भी है। आप गुदई महाराज के समकालीन तबला वादक थे, आपसे प्रेरित होकर गुदई महाराज ने 16–16 घंटो रियाज किया। आपके विषय में गुदई महाराज कहते थे यदि अनोखे भईया होते तो उनका तबला सभी को आनन्द देता।

3.10.7 पं० सुधई महाराज

पं० सामता प्रसाद जी के कनिष्ठ भ्राता पं. कामता प्रसाद जी उर्फ 'सुधई महाराज' उम्र में पं. सामता प्रसाद से लगभग चार–पाँच वर्ष छोटे थे। इस हिसाब से उनकी जन्म तिथि 1924–25 होनी चाहिए। माँ भागमनी देवी के त्याग ने एक नहीं बल्कि दो सुपुत्रों को संगीत सेवा में अपर्ण किया। एक प्रसिद्ध तबला वादक और दूसरा अनुशासित तबला ज्ञाता मार्गदर्शक। एक नींव भरवाता तो दूसरा उसे मंच तक पहुँचाने में सहायता करता। सामता प्रसाद जी के कुल में अनुज सुधई महाराज का आपके पुत्रों एवं शिष्यों को शिक्षा देने तथा कठोर दैनिक अभ्यास कराने में विशेष योगदान रहा है।

पं० कुमारलाल जी के साक्षात्कार से प्राप्त ज्ञान के आधार पर शोधार्थी को ज्ञात हुआ कि गुदई महाराज के आलोचक सुधई महाराज ही थे। जब भी कभी गुदई महाराज उनसे पूछते कि बताओं यह बोल कैसा बज रहा है? तो सुधई महाराज बेबाक से कहते ना ही भैय्या अभी सही नाही अभी कुछ कसर बाकी रहे और रियाज करिहे तब कुछ रस आवा अर्थात वह गुदई महाराज को और अधिक रियाज के लिए उत्साहित करते थे।

कुमार लाल जी ने साक्षात्कार में बताया कि पहले पिताजी सुधई महाराज को अपनी प्रस्तुती सुनाते, बाद में संगीत प्रेमी जनता सुनती थी।

कुमार लाल जी के अनुसार वह बहुत गुणी कलाकार थे। अच्छा तबला बजाते थे। पिताजी जिस शिखर पर पहुँचे वहाँ पर पहुँचने में चाचा जी का बहुत बड़ा हाथ रहा। पिताजी उनसे पूछते थे कि "हमारा बोल ठीक निकल रहा है तो वह कहते कि नहीं इसमें कसर बाकी है और माँजिये।"

कई बार गुदई महाराज रोष प्रकट करते थे कि दुनिया तो हमारे तबले को बहुत मानती है तो छोटे भ्राता कहते कि हमसे मत पूछा करो कि बोल कैसा निकल रहा है, हम वही कहेगे जो हमें सही लगेगा।

जेरी मैसी जी के अनुसार गण्डा बन्धन गुरू जी करते थे, सिखाते सुधई महाराज थे। गुरू जी तो रूम थे गोदाम सुधई महाराज ही थे। लोग प्रभावित गुरू जी से होते थे। सीढ़ी चढ़ना सुधई महाराज बताते थे।

जेरी मैसी जी ने शोद्यार्थी को बताया कि मेरे असली गुरू अगर कहा जाये तो सुधई महाराज हुये। उन्होंने ही मुझे सिखाया। हाथ रखने से लेकर जितना वजन हाथ में होना चाहिए। दो घण्टे हमसे इतनी मोटी लकड़ी (लगभग डेढ़ इंच माटी लकड़ी) का तबला बजवाते थे। सुधई महाराज कहते थे "ई पर बजइबा तब कुछ समझ में आई।" अर्थात् कहते थे कि इस पर बजाओगे लकड़ी के तबले पर बजाओंगे तो हाथ में वजन बढ़ेगा।

3.11 वर्तमान में अधिकांश तबला वादकों के आदर्श, तालमार्तण्ड, तबला जादूगर तबला विद्वान पं० गुदई महाराज से प्रेरणा लेकर बहुत से तबला वादकों को प्रसिद्धि प्राप्त हुई उनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है :–

3.11.1 पंडित गामा महाराज

पं० गामा महाराज का जन्म एक ऐसे संगीतज्ञों के परिवार में हुआ, जिसमें संगीत की पावन धारा पिछले लगभग 100 वर्षो से भी अधिक समय से बह रही थी। इस परिवार में सदा

से तबला, गायन एवं सितार के स्वर एवं शब्दों का संगम रहा है। ऐसे विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न परिवार में आपका जन्म सन् 1911 में हुआ था। आपके पिता पं. बिक्कू महाराज थे। घर में धार्मिक विचार धाराओं की प्रधानता होने के कारण आपका नाम 'रामायण' रखा गया था। परम्परागत रूप में बालक रामायण को 5 वर्ष की आयु में अपने पिता पं. बिक्कू महाराज जी द्वारा तबले की विधिवत् शिक्षा प्राप्त हुई। आप तबले के प्रकाण्ड विद्वान थे।

3.11.2 कुमार लाल मिश्र

आपका जन्म सन् 1945 ई० में बनारस के कबीरचौरा मोहल्ले में संगीतकारों के एक प्रसिद्ध परिवार में हुआ। इनके प्रपितामह जगन्नाथ महाराज, पितामाह पं. बाचा महाराज एवं पिता पं० गुदई महाराज विख्यात तबला वादक रहे है। आप पं० गुदई महाराज की प्रथम पत्नी तारा देवी के ज्येष्ठ पुत्र है। आपको तबला वादन की कला विरासत में मिली। लगभग 6 वर्ष की बाल्यावस्था से ही आप को तबले की तालीम अपने पिता से प्राप्त होने लगी। ये अत्यन्त छोटी अवस्था से ही तबला वादन कर रहे है। बाद में कई वर्षो तक आपको पं० महोदव मिश्र से भी सीखने का अवसर प्राप्त हुआ है।

आपकी वादन शैली में सफाई, तैयारी, मधुरता एवं संगति में निपुणता विशेष रूप से दिखाई पड़ती है। आपको देश के अनेक संगीत सम्मेलनों में दिग्गज संगीतज्ञों के साथ संगति करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आप अनेक बार विदेशों में भी तबला वादन कर चुके है। नृत्य के साथ इनकी संगति विशेष प्रसिद्ध है। ललित कला विद्यापीठ कानपुर ने 'तबला शिरोमणि' तथा सिने यूनाइटेड म्यूजिशियन एण्ड सिंगर एसोसिएशन हैदराबाद ने ताल चक्रवर्ती की उपाधि प्रदान की है। आप आकाशवाणी वाराणसी के विभागीय कलाकार भी रहे हैं। जहाँ से कुछ वर्षो पूर्व ही कुमार लाल जी सेवानिवृत हुए हैं। आपके छोटे भाई श्री कैलाश प्रसाद भी अच्छे तबला वादक हैं। पं० कुमार लाल जी के पुत्र श्री मंगला प्रसाद भी तबला वादन कर संगीत सेवा कर रहे हैं।

3.11.3 पं० रंगनाथ मिश्र

पं० रंगनाथ मिश्र का जन्म सन् 1933 ई० को बनारस के प्रतिष्ठित संगीत समाज में हुआ। आपने तबला वादन की विधिवत् शिक्षा अपने पितामाह पं. बिक्कू महाराज एवं पिता पं० गामा महाराज से प्राप्त की। इसके साथ ही आप बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातक एवं प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद द्वारा आयोजित' संगीत प्रवीण की परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर स्वर्ण पदक से सम्मानित किये गये।

देश की विभिन्न सांगीतिक, सांस्कृतिक संस्थाओं, महाविद्यालयों, आकाशवाणी एवं उत्तर–प्रदेश संगीत नाटक अकादमी से पंड़ित जी परीक्षक एवं चयन समिति के सदस्य आदि के रूप में जुड़े रहे। आप भातखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय में तबला एवं पखावज के विभागाध्यक्ष पद पर भी कार्यरत थे।

पंडित जी को संगीत के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु अनेक मान–सम्मान मिल चुके है। जिनमें से कुछ इस प्रकार है : 1954 में सम्पन्न अन्त विश्वविद्यालय युवा महोत्सव में स्वर्ण पदक, 1964 में बिहार के शिक्षा मंत्री द्वारा स्वर्ण पदक, 1994 में स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन द्वारा तबला शिरोमणि की उपाधि आदि प्रमुख है।

आप आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के सर्वोच्च श्रेणी के कलाकार थे। एक अच्छे तबला वादन होने के साथ ही साथ आप एक अच्छे लेखक एवं संगीत चिंतक भी थे। आपकी अनेक रचनाएँ ग्रन्थों में पढ़ने को मिलती है। आपके पुत्र राजेन्द्र मिश्र एवं शिवेन्द्रनाथ मिश्र सहित अनेक शिष्य संगीत के क्षेत्र में सक्रिय है।

3.11.4 पंडित संजू सहाय

बनारस घराने के युवा प्रतिनिधि तबला वादक संजू सहाय का जन्म बनारस में हुआ। आपके पिता पं० रामशंकर सहाय एक अच्छे कलाकार थे। आप पं० राम सहाय जी के तबला वादन की वंश परम्परा के छठी पीढ़ी के कलाकार हैं। आपने तबले की शिक्षा अपने चाचा पं०

शारदा सहाय से प्राप्त की। आज आप एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तबला वादक है। आप आकाशवाणी के A ग्रेड कलाकार है।

मात्र 4 वर्ष की आयु में आपने अपना प्रथम तबला वादन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। आज आप देश के प्रायः सभी कलाकारों के साथ कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुके है। जिनमें कुछ के नाम इस प्रकार है। डॉ० अमजद अली खाँ, आशिक खाँ (सरोद) पं० राजन–साजन मिश्र (गायन) पं० गोपीकृष्ण एवं बिरजू महाराज (नृत्य), पं० विश्वमोहन भट्ट, पं० भजन सोपोरी, शिवरामन, डॉ० सुल्तान खाँ आदि। आपने भारत एवं विदेश के प्रायः सभी संगीत समारोहों में भाग लेकर तबला वादन को एक नई पहचान दिलवाई है। शोधार्थी के अनुसार पं० गुदई महाराज के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि आप एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी थे जिसके कारण संगीत के क्षेत्र में आपको तबले के देवता, मसीहा, जादूगर, पैगम्बर, सुपरस्टार, नाद के देवता आदि विश्लेषणों से नवाजा गया। गुदई महाराज जी के जीवन में सहज योग चरित्रार्थ होता था। उन्होंने बड़े–बड़े कार्य अत्यन्त सहजता से सम्पन्न किए। आपका बोलना जितना सहज था, वादन भी उतना ही सहज था। आपके विद्यार्थियों, शिष्यों में भी वह सहजता स्पष्ट देखी जा सकती हैं। शोधार्थी ने जहॉ उनके शिष्य सत्यनारायण वशिष्ठ जी से गन्डाबंध शिक्षा ली। वहीं गुदई महाराज के शिष्य पं० रमेश पारीक जी की शिक्षा से भी शोधार्थी लाभान्वित हुई हैं। गुदई महाराज एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी थे जिससे कोई भी बहुत अल्प समय में प्रभावित हो जाता था।